P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मध्ययुगीन निर्गुण सन्त मलूकदास का चिन्तन

सारांश

उत्तर भारत में 15वीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक विशिष्ट चिन्तन आध्यात्मिक आन्दोलन के रूप में उभरा। यहाँ यह दो वर्गों में विकसित हुआ और 18वीं शताब्दी के अन्त तक चलता रहा। सगुण भक्ति का तात्पर्य था ईश्वर के साकार रूप या भौतिक गुणों की समर्पित भाव से आराधना। दूसरी ओर निर्गुण भक्ति से तात्पर्य एक ऐसे ब्रह्म की आराधना थी जो निराकार और सर्वत्र विद्यमान था और उसे आध्यात्मिक अभ्यासों द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था। कबीर, नानक, दादू एवं मलूकदास जैसे सन्त इसका प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इस क्रम में कड़ा (इलाहाबाद) स्थित आश्रम में निर्गुण कवि सन्त मलूकदास (1574–1682 ई0) ने वेदों की भक्ति को अस्वीकार किया, परम्परागत धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराओं एवं अतार्किक मान्यताओं का विरोध किया। सन्त मलूक ने हिन्दू–मुस्लिम समन्वय तथा एकेश्वरवाद और वेदान्त के अद्वैतवाद से अभिप्रेरित सामाजिक धार्मिक समरसता तथा आमजन को स्वीकार्य चिन्तन को अपनी वाणियों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

मुख्य शब्द : जीव, आत्मा, जप, माया, एकेश्वर, पीर, सतगुरू, सुमिरन।

रामनरेश
शोध छात्र,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डा0 बी0आर0 आम्बेडकर
विश्वविद्यालय,
आगरा

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में परिवर्तन हेतु तत्कालीन सगुण तथा निर्गुण सन्तों का विशेष योगदान रहा। इसी क्रम में निर्गुण भक्ति परम्परा के सन्तों ने स्वतन्त्र, व्यावहारिक एवं आमजन के हितार्थ आध्यात्मिक मार्ग का सन्देश दिया। साथ ही एक ऐसा धार्मिक वातावरण बनाने का प्रयास किया जो विभिन्न जातियों तथा धर्मों के लोगों को सहज रूप में स्वीकार्य हो। निर्गुण सम्प्रदाय के इन सन्तों ने वेदों की दैवी शक्ति को अस्वीकार किया, पुरातन परम्पराओं एवं अवैज्ञानिक मान्यताओं से सम्बन्ध तोड़ा, सामाजिक भेद–भाव के विरूद्ध संघर्ष किया और हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए प्रयास किया। इस प्रकार एक स्वतन्त्र धार्मिक चिन्तन के रूप में एक आध्यात्मिक आन्दोलन को मूर्त्त रूप दिया। निर्गुण पंथ के सन्त तत्कालीन समाज के हाशिये से ऊपर उठकर मुख्यधारा में अपने को स्वतन्त्र रूप में स्थापित करने में सफल रहे। इन सन्तों ने केवल परम्परागत हिन्दूवाद के विधि–विधानों को ही चुनौती नहीं दी, अपितु धार्मिक नेतृत्व को अपने हाथों में लेकर ब्राह्मणों के एकाधिकार को निरस्त कर दिया।[1]

उनके सुधारों का क्रम सैद्धान्तिक एवं वैचारिक आधार पर अवलम्बित था, जबकि उनका उद्‌देश्य जीवन के व्यावहारिक पक्षों को कार्यान्वित करना था। इनमें से कुछ ने अपने उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिए राजनीतिक एवं सशक्त स्वरूप भी धारण कर लिया।[2]

शोध पत्र का उद्‌देश्य

शोधार्थी ने इस शोध पत्र के निम्नलिखित उद्‌देश्यों को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

1. निर्गुण सन्त परम्परा में सन्त मलूकदास की वाणियों में धार्मिक एवं सामाजिक चिन्तन के तत्वों को प्रस्तुत करना।
2. मध्यकालीन समाज में व्याप्त सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराओं के विरोध में सन्त मलूकदास के योगदान पर प्रकाश डालना।
3. सन्त मलूकदास के सामाजिक चिन्तन के तत्कालीन भारत तथा आधुनिक भारत में प्रभाव की व्याख्या करना।

साहित्यावलोकन

शोधार्थी ने निम्नलिखित सन्त मलूक की वाणियों के सन्दर्भ में रचित ग्रन्थों का अध्यापन किया है।

1. संत चरण धूर, सम्पादित मलूकदास जी की बानी, बेलवीडियर प्रिंटिग वर्क्स, इलाहाबाद, 1971। इस पुस्तक में सन्त मलूकदास की वाणियों का संग्रह किया गया है। सन्त मलूकदास की भाषा खड़ी बोली थी जिसमें उर्दू तथा

2. फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। सन्त मलूक के चिन्तन पर उनके शब्दों को प्राप्त करने में इस ग्रन्थ का बहुत योगदान रहा है।
3. व्ंशी, बल्देव, संत मलूक ग्रन्थावली परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2012। इस पुस्तक में सम्पादक ने सन्त मलूक के दोहे व पदों को एकत्र करके प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक से भी सन्त मलूक के चिन्तन पर उनकी वाणियों के मूल पाठ को प्राप्त किया गया है।
4. चतुर्वेदी, परशुराम, उत्तरी भारत की सन्त परम्परा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1931। लेखक ने उत्तरी भारत के निर्गुण सन्तों के जीवन परिचय तथा उनके योगदान को स्पष्ट किया है। इस विस्तृत ग्रन्थ में विभिन्न निर्गुण सम्प्रदायों के विकास का भी उल्लेख प्राप्त होता है। पुस्तक में उपलब्ध सामग्री संक्षिप्त है।
5. वंशी, बल्देव, संत कवि मलूकदास, इन्द्रप्रस्थ इन्टरनेशनल, दिल्ली, 2006। इस पुस्तक में लेखक ने सन्त मलूक के जीवन, दर्शन, तथा प्रमुख घटनाओं को प्रस्तुत किया है।

निर्गुण भक्ति परम्परा की इस अलौकिक आध्यात्मिक यात्रा में सन्त मलूकदास का सामाजिक एवं धार्मिक परिवर्तनों को सफल बनाने में उल्लेखनीय योगदान रहा। सन्त मलूकदास ने अपनी सहज और स्थानीय भाषा में अपनी वाणियों से एकेश्वरवाद तथा धर्म की वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक अवधारणा को जन–जन तक पहुंचाया। उन्होंने परमात्मा का सभी मनुष्यों में होने का उपदेश दिया।

जो ब्रह्माण्ड पिण्ड है सोई।
पै यह परम लखै नहिं कोई।।
जीव–जीव को मन में मन की।
बुद्धि–बुद्धि को चित है चित को।।[3]

उनका कहना था कि दैवीय शक्ति का सभी मैं प्रतिबिम्ब है तथा यही शक्ति सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को स्थिर किये है।

सब कलियन में बास है, बिना बास नहिं कोय।[4]

सन्त मलूक ने परमात्मा के प्रति प्रेम तथा समर्पण को ही आराधना का सर्वोत्तम स्वरूप बताया। उनके मत में परमात्मा किसी मन्दिर, मस्जिद तक ही सीमित न होकर सभी में व्याप्त है। इसीलिए उन्होंने धार्मिक आडम्बर, मान्यताओं तथा अन्धविश्वास का विरोध किया। वह कहा करते थे कि परमात्मा उनसे प्रेम करता है जो अन्य की सेवा करते हैं।

''कहत मलूक सोई जन तेरों जो पर पीर हरै।।''[5]

सन्त मलूकदास ने मूर्ति पूजा की आलोचना की तथा पौराणिक ग्रन्थों को भी चुनौती दी।

''मूरत मूजैं बहुत मति, नित नाम पुकारैं।
कोटि कसाई तुल्य हैं, जो आत्ममारौं।[6]

कबीर की भांति सन्त मलूक ने तीर्थ यात्राओं तथा धार्मिक विधि–विधानों को परमात्मा तक पहुंचने का साधन नहीं माना। उनके मत में इस प्रकार के बाहरी दिखावे का कोई उपयोग नहीं है।

सन्ध्या तर्पन सबतजे, तीरथ कबहुँ न जाऊँ।
हरि हीरा हिरदय मिला, ताहि पौढ़े अन्हवाऊँ।।[7]

वह कहते थे कि परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है तथा आत्मा को किसी धार्मिक ग्रन्थ तक सीमित नहीं रखा जा सकता।

सर्व व्यापक आत्मा, सतगुरू दियो बताई।
अब क्यों पाती तोरिके, प्रतिमा पूजौं जाई।।[8]

उनके अनुसार ब्रह्म हर जीव में विद्यमान है। आत्म–रूप में परमात्मा सर्व व्याप्त है। उसे खोजने दूर कहीं नहीं जाना।

एकही अक्षर ते सकल, प्रकृति पुरुष विस्तार।
कह मलूक वह विधि जगत, नामहि है विस्तार।।
कारण जग को ब्रह्म है, और न कोउ आहि।
यह प्रपंच सब ब्रह्म है, जानहु निस्चै आहि।।[9]

सन्त मलूक का सम्पूर्ण जीवन समाज के उपेक्षित तथा निर्धनों के लिए समर्पित था।

भूखेहि टूक प्यासेहिं पानी।
एहि भगति राम मनमानी।।[10]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कबीर, दादू, नानकदेव, रैदास आदि की भांति संत मलूकदास भी देह एवं भौतिक जगत के परे और भीतर आत्मा, परम आत्म–चेतना के 'जागरण' को ही सबसे बड़ा मानव गुण मानते थे। इस आत्मा–परमात्मा के प्रति समर्पण, जागरण, परमात्मा की रचना में इस चेतन संसार के प्रति स्नेह–भाव से भरना ही सर्वोच्च मानवीयता है। यही भाव मनुश्य को परमात्मा से सम्बद्ध कर देता है। उपनिषदों में इस परमात्म स्थिति को ''अहं ब्रह्मास्मि' अर्थात मैं ब्रह्म हूँ कहा है। तीनों लोकों में इसी का ही विस्तार है। धरती–आकाश, सूर्य–चन्द्र, पशु–पेड़ सब में यही परमात्मा का स्वरूप व्याप्त है।

सबहिन के हम सबै हमारे।
जीव जन्तु मोहिं लागैं पियारे।
तीनों लोक हमारी माया।
अंत कतहुं से कोइ नहिं आया।
सहै कुशब्द और सुमिरै नांव।
सब जग देखै एकै भाव।
या पद का कोई करै निबेरा।
कह मलूक मैं तका चेरा।[11]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संत चरण धूर, सम्पादित मलूकदास जी की बानी, बेलवीडियर प्रिंटिग वर्क्स, इलाहाबाद, 1971।*
2. *वंशी, बल्देव, संत मलूक ग्रन्थावली परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2012।*
3. *चतुर्वेदी, परशुराम, उत्तरी भारत की सन्त परम्परा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1931।*
4. *वंशी, बल्देव, संत कवि मलूकदास, इन्द्रप्रस्थ इन्टरनेशनल, दिल्ली, 2006।*
5. *बर्थवाल, पी0डी0, द निर्गुन स्कूल ऑफ हिन्दी पोएट्री, इण्डियन बुक शॉप, बनारस, 1936।*
6. *द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1969।*
7. *शर्मा, कृष्ण, भक्ति एण्ड द भक्ति मूवमेन्ट : ए न्यू पर्सपेक्टिव, मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली 1987।*

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

8. ताराचन्द्र, इन्फ्लुयन्स ऑफ इस्लाम ऑन इण्डियन कल्चर, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, 1963।

पाद टिप्पणी

1. इराकी, शहाबुद्दीन, मध्यकालीन भारत में भक्ति आन्दोलन सामाजिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 2012, पृ0 226
2. इराकी, शहाबुद्दीन, मध्यकालीन भारत में भक्ति आन्दोलन सामाजिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 2012, पृ0 226
3. वंशी, बल्देव : संत मलूकदास ग्रन्थावली, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ0 151–153
4. वंशी, बल्देव : संत मलूकदास ग्रन्थावली, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ0 151–153
5. वंशी, बल्देव : संत मलूकदास ग्रन्थावली, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ0 151–153
6. सलीम, मोहम्मद, दि कन्सेप्ट ऑफ गॉड न मलूकस् पोइट्री शोध पत्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय, अंग्रेजी विभाग, पृ0 4
7. सलीम, मोहम्मद, दि कन्सेप्ट ऑफ गॉड न मलूकस् पोइट्री शोध पत्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय, अंग्रेजी विभाग, पृ0 5
8. मलूक ग्रन्थावली, पूर्वोक्त
9. संत कवि मलूकदास, पूर्वोक्त, पृ0 28
10. संत कवि मलूकदास, पूर्वोक्त, पृ0 28
11. संत कवि मलूकदास, पूर्वोक्त, पृ0 31